बुद्धि

बुद्धि तथा उसकी परिभाषा के संबंध मे मनोवैज्ञानिक की अपनी-अपनी धारणाएँ हैं जो निम्नांकित तथ्य पर आधारित हैं -

① बुद्धि : एक समायोजन - योग्यता - इस परिभाषा के अनुसार जिस व्यक्ति में जितना समायोजन करने की शक्ति होता है अथवा जो व्यक्ति अपने परिवेश में उत्तम ढंग से समायोजित कर पाता है उसे बुद्धिमान व्यक्ति कहा जाता है।

~~[illegible]~~
~~[illegible]~~

स्टर्न के अनुसार - "बुद्धि जीवन की नवीन समस्याओं के समायोजन की सामान्य योग्यता है।"

स्पियरमैन - "अमूर्त वस्तुओं के विषय

कौलविन - " बुद्धि व्यक्ति को नई परिस्थितियो के अभियोजन होने में सहायता करती है।"

उपर्युक्त परिभाषा में सिर्फ समायोजन योग्यता पर बल दिया गया है और बौद्धिक योग्यता की उपेक्षा की गई है। बौद्धिक योग्यता जन्मजात होती है जबकि समायोजन योग्यता अर्जित होती है।

② बुद्धि : सीखने की योग्यता : बुद्धि के द्वारा ही व्यक्ति सीखने की योग्यता तथा अनुभव ग्रहण करता है। जो व्यक्ति जितना जटिल चीजों को सीख पाता है उतना ही बुद्धिमान माना जाता है, इसके विपरीत जो व्यक्ति जटिल विषय-वस्तु को सीख नहीं पाता है उसे मंद व्यक्ति माना जाता है।
बकिंघम के अनुसार - "बुद्धि सीखने की योग्यता है।"
टर्मन के अनुसार - "एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान होता है जिसमें वह अमूर्त रूप से चिंतन की क्षमता रखता है।"
उपर्युक्त परिभाषा में सिर्फ सीखने की योग्यता पर बल दिया गया है और जन्मजात योग्यता (बौद्धिक क्षमता) का उपेक्षा किया गया है।
③ बुद्धि : एक समग्र योग्यता - इसी योग्यता के कारण हम विषय-वस्तु को सीख पाते हैं, याद कर पाते हैं और कभी अभियोजन कर पाते हैं।
वेश्लर के अनुसार - "बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र क्षमता है जो उसे उद्देश्यपूर्ण कार्य, विवेकपूर्ण चिंतन तथा प्रभावपूर्ण अभियोजन में सहायता करती है।"

स्पीयरमैन का द्वितत्व - सिद्धांत

स्पीयरमैन (1927) ने बुद्धि के दो तत्वों मे विभक्त किया है:-

ⓐ सामान्य तत्व (G- factor)

ⓑ विशिष्ट तत्व (S- factor)

ⓐ सामान्य तत्व - बुद्धि का यह एक ऐसा भाग है जो व्यक्ति के सभी संज्ञानात्मक कार्यों को सामान्य रूप से प्रभावित करता है। बुद्धि का लगभग 95% भाग सामान्य तत्व है। इसकी मात्रा सभी व्यक्तियों मे निश्चित होता है जिस पर शिक्षण तथा प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है अतः बुद्धि का यह तत्व अनुवांशिक होता है।

ⓑ विशिष्ट तत्व - बुद्धि का यह भाग सामान्य तत्व की अपेक्षा बहुत छोटा होता है। कुल बुद्धि का 5% भाग ही विशिष्ट तत्व वाला होता है। इस पर शिक्षण तथा प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है।

गुण: ① स्पीयरमैन के अनुसार प्रत्येक बौद्धिक कार्य में 'g' तथा 'S' दोनों कारक सम्मिलित होते हैं। इसमें 'g' कारक की महत्ता अधिक बताई गयी है। g कारक कम होने पर व्यक्ति को बौद्धिक कार्य करने में पूर्ण सफलता नहीं मिलती है।

② इस सिद्धांत के आधार पर अनेक शोध-कार्य प्रारंभ हुए तथा बुद्धि के स्वरूप उजागर हुए।

③ इसी सिद्धांत से प्रभावित होकर थार्नडाइक ने बहुतत्व-सिद्धांत थर्स्टन ने समूहतत्व सिद्धांत, वर्नन ने श्रृंखला-सिद्धांत तथा गिलफोर्ड ने त्रिविमात्मक सिद्धांत को प्रतिपादित किया।

④ अधिकांश बुद्धि परीक्षण इसी सिद्धांत की अभिधारणाओं के आधार पर संभव हो सका है।

⑤ इस सिद्धांत में वैयक्तिक भिन्नता अच्छे ढंग से किया गया है।

दोष :- (i) अनेक मनोवैज्ञानिकों ने कहा है कि बुद्धि में केवल दो तत्व नहीं बल्कि अनेक तत्व सम्मिलित है।

② पीयर्सन ने इस सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहा है कि यह सिद्धांत बहुत कम प्रयोगात्मक प्रमाणों पर आधारित है।

③ बुद्धि परीक्षणों के बीच अंतर्संबंधों की व्याख्या केवल सामान्य तत्व द्वारा संभव नहीं है।

④ स्पीयरमैन ने सामान्य तत्व की मात्रा अधिक माना है लेकिन सामान्य तत्व की मात्रा यदि अधिक होता तो भिन्न-भिन्न आयों के बीच सह-संबंध भी अधिक होता।